सीखने के कोने

परिचय -

इस paper/लेख में, हम आंगनवाड़ी केंद्र (AWC) में शिक्षण कोनों की व्यवस्था करने के महत्व के विषय में जानेंगे, जिससे बच्चों के सीखने और विकास में सहायक एक प्रेरक वातावरण तैयार करने में सहायता मिलती है । आँगनवाड़ी केंद्र में सीखने के कोने थीम-आधारित खेल खेलने का वह स्थान है, जहाँ एक विशिष्ट विकास के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए बच्चों में दक्षताओं व कौशलों का विकास किया जाता है, जैसे पढ़ने के कोने में भाषा विकास, विज्ञान और पहेली/ब्लॉक कोनों में संज्ञानात्मक विकास, तथा कला और शिल्प, संगीत और नाटक कोनों में रचनात्मकता और मोटर विकास। यद्यपि प्रत्येक कोना एक विशिष्ट विकासात्मक क्षेत्र के कौशलों को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है, फिर भी वे स्वतंत्र रूप से बच्चों में समग्र विकास को प्रोत्साहित भी करते हैं। इन कोनों में आयु-उपयुक्त और बच्चों के अनुकूल सामग्री उपलब्ध कराई गई है, ताकि बच्चों को व्यक्तिगत खेल के साथ-साथ सहयोगात्मक खेल में भी शामिल किया जा सके। आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को खेलने के खाली समय में इन शिक्षण कोनों में खुद को व्यस्त रखने का अवसर दिया जाता है। स्वतंत्र खेल के समय बच्चे आंगनवाड़ी कार्यकत्री (AWW) या आंगनवाड़ी सहायिका (AWH) के सहयोग के बिना सभी सीखने के कोनों में अपनी इच्छा के अनुसार स्वयं को निर्देशित करते हुए गतिविधियों को करते हैं।

पहल पुस्तिका के अनुसार सीखने के कोने

राज्य द्वारा विकसित की गयी पहल पुस्तिका में आंगनवाड़ी केन्द्रों में सीखने के कोनों की व्यवस्था करने के लिए सुझाव दिए गए हैं। पहल में सुझाए गए सीखने के कोने बच्चों में जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं, साथ ही उनके संवेदी विकास, संज्ञानात्मक क्षमताओं, सामाजिक-भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और भाषा और संचार कौशल को बढ़ाते हैं। सीखने के यह कोने बच्चों में स्वतंत्र अन्वेषण व जिज्ञासा को बढ़ावा देते हैं , जिससे उन्हें अपनी पसंद और अपनी सीखने की गति के अनुसार गतिविधियों में संलग्न होने में और अपनी व्यक्तिगत रुचियों व जिज्ञासाओं को संतुष्ट करने में होने में सहजता होती है |इससे बच्चों को खेल के दौरान अपनी व्यक्तिगत रुचियों और जिज्ञासाओं को खोजने के अवसर देने में मदद मिलती है । ये कोने हैं –

1) नाटक कोना
2) ब्लाक कोना
3) कला एवं शिल्प कोना
4) किताब कोना

नाटक का कोना : नाटक का कोना केंद्र का वह स्थान है जहाँ बच्चे काल्पनिक खेल या रोल प्ले में प्रतिभाग करते हैं। यह कोना रचनात्मकता, सामाजिक-भावनात्मक और भाषा कौशल के विकास को काफी हद तक प्रोत्साहित करता है। नाटक के कोने में विशिष्ट खेल सामग्री जैसे डॉक्टर सेट, जानवरों का सेट , फल और सब्जी सेट, बागवानी सेट, बढ़ईगीरी सेट के साथ-साथ पुराने घरेलू सामान जैसे चश्मा, दुपट्टा, कागज के डिब्बे और बक्से, पुराने खिलौने, हाथ से बनी कठपुतलियाँ या गुड़िया आदि

रखी जा सकती हैं। नाटक कोने में दर्पण रखने से बच्चों की आत्म-जागरूकता विकसित करने, भाषा कौशल को सुगम बनाने और शारीरिक समन्वय को बढ़ावा देने में मदद मिलती है, क्योंकि बच्चे दर्पण का उपयोग अपनी गतिविधियों और अभिव्यक्तियों को देखने के लिए करते हैं।

ब्लाक कोना : ब्लॉक का कोना बच्चों में समस्या समाधान, स्थानिक जागरूकता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है। इस कोने में बिल्डिंग ब्लॉक, पहेलियाँ, अलग-अलग रंग के मोती, पैटर्न बनाने के लिए ज्यामितीय आकृतियों वाले कार्ड, स्टैकिंग कप या रिंग, अनुक्रमिक कार्ड, संख्या कार्ड और सरल गतिविधि शीट को शामिल किया जा सकता है ।

कला और शिल्प का कोना: कला और शिल्प का कोना बच्चों को उनकी रचनात्मकता और कल्पना को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित स्थान देता है। इस कोने में क्रेयॉन, स्केच पेन, सफ़ेद कागज़, मिट्टी, पुराने कार्डबोर्ड बॉक्स, गोंद, माचिस की खाली डिब्बी, पेंट और ब्रश, धारहीन कैंची, मोती और प्राकृतिक वस्तुएँ जैसे पत्ते, फूल, कंकड़, सीपियाँ आदि हो सकती हैं।

पुस्तक का कोना: यह कोना बच्चों में किताबों से जुड़ाव, अक्षरों और लिखित सामग्री से परिचित होने, रचनात्मकता और पढ़ने से पहले के कौशल को बढ़ावा देता है। इस कोने में आयु-उपयुक्त सामग्री जैसे बड़े चित्र से युक्त पुस्तकें, बड़ी पुस्तकें, सरल व कम वाक्य में लिखित कहानी की पुस्तकें ,रंगीन ,आकर्षक और थीम आधारित पोस्टर होने चाहिए। इस कोने में स्लेट और चाक भी रखे जा सकते हैं जो बच्चों को लिखने और चित्रकारी करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे ।

इसके अतिरिक्त, आंगनवाड़ी कार्यकत्री केंद्र में एक विज्ञान का कोना भी बना सकती है। विज्ञान का कोना बच्चों के लिए विभिन्न सामग्रियों के प्रयोग द्वारा वैज्ञानिक अवधारणाओं की सरल खोज-बीन करने के लिए एक निर्धारित स्थान है, जैसे गति की अवधारणाएँ-तेज और धीरे , पानी के गुण-ठंडा और गरम , चुंबकत्व आदि। विज्ञान कोने में चुंबक, पानी का एक टब, मापने वाले चम्मच, कंटेनर, प्राकृतिक वस्तुएँ जैसे कंकड़, पत्ते, फूल, छड़ें आदि, कीटों, पौधों का जीवन चक्र आदि के चार्ट और पोस्टर और मेग्निफयिंग ग्लास जैसी सामग्री हो सकती है।

स्वतंत्र खेल के समय में सीखने के कोनों में प्रतिभाग करने से बच्चों में सामाजिक-भावनात्मक विकास , सहानुभूति, आत्म-नियमन को बढ़ावा मिलता है, आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान में वृद्धि होती है, संचार कौशल व सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहन मिलता है तथा एक सुरक्षित और समावेशी वातावरण का निर्माण होता है। बच्चे में प्रमुख सामाजिक कौशल विकसित होते हैं, जैसे दूसरों के साथ साझा करने की क्षमता, अपनी बारी का इंतजार करना, नेतृत्व की भूमिका निभाना, खेल के दौरान निष्पक्षता प्रदर्शित करना और विवादों का समाधान करना।

आंगनवाड़ी केंद्र में सीखने के कोने स्थापित करने में आंगनवाड़ी कार्यकत्री और आंगनवाड़ी सहायिका की भूमिका

***आंगनवाड़ी कार्यकत्री* :**

- *दैनिक दिनचर्या में खेलने के लिए स्वतंत्र समय सुनिश्चित करें!!*
- बच्चों के आने से पहले आंगनवाड़ी केंद्र में शिक्षण कोने स्थापित करें।
- राज्य द्वारा उपलब्ध कराए गए प्री-स्कूल किट के खिलौनों और अन्य वस्तुओं को शिक्षण कोनों में व्यवस्थित करें।
- लर्निंग कॉर्नर की सभी सामग्री बच्चों की पहुँच में होनी चाहिए। उन्हें किसी डिब्बे या अलमारी में "सुरक्षित रूप से पैक करके" न रखें !!
- दिन समाप्त होने के बाद सामग्री को सुरक्षित स्थान पर रखें।
- बच्चों को अपनी रुचि के अनुसार शिक्षण कोना चुनने के लिए प्रोत्साहित करें।
- खेलने के बाद खाली समय में बच्चों के साथ उनकी रचनाओं के बारे में बातचीत करें। बच्चों की रचनात्मकता और कल्पना को जगमगाने दें।

आँगनवाड़ी सहायिका :

- बच्चों के आने से पहले आंगनवाड़ी केंद्र में शिक्षण कोने स्थापित करने में आंगनवाड़ी कार्यकत्री की मदद करें।
- बिना हस्तक्षेप किए, जब बच्चे कोनों में गतिविधियां कर रहे हों तो उन पर निगरानी रखें।
- केवल तभी हस्तक्षेप करें जब बच्चों के बीच झगड़ा बढ़ रहा हो जिससे वे एक-दूसरे को चोट पहुँचाने लगें।
- दिन के अंत में शिक्षण कोनों की सामग्री को सुरक्षित स्थान पर रखने में आंगनवाड़ी कार्यकत्री की सहायता करें।

सीखने के कोने कमरे के कोने नहीं हैं !!

सीखने के कोनों की व्यवस्था के लिए सजग अभ्यास

- **अलग-अलग लर्निंग कॉर्नर यानि की सीखने के कोनों के बीच पर्याप्त दूरी या स्थान बनाए रखें** – सीखने के कोने कमरे के चार कोने नहीं होते हैं । इसलिए, कमरे के आकार के आधार पर, दीवार के बीच में एक सीखने के कोना बनाया जा सकता है या तीन भी बनाए जा सकते हैं। लेकिन यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रत्येक सीखने के कोने के बीच पर्याप्त दूरी हो, ताकि बच्चे आराम से बैठ सकें, कोने के आसपास की जगह का भरपूर उपयोग कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर आसानी से इधर-उधर घूम सकें।

- **कम से कम दो सीखने के कोने स्थापित करें –** यदि आंगनवाड़ी केंद्र के कक्ष में तीन या अधिक सीखने के कोने विकसित करने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है, तो यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक दिन कम से कम दो कोने स्थापित किए जाएं। हर दूसरे दिन कोनों को थीम अनुसार बदला जा सकता है। इससे बच्चों में अगले दिन के लिए भी रुचि पैदा होगी।

- **प्री-स्कूल किट में सीमित संसाधनों का उपयोग -** यदि प्री-स्कूल किट में दी गई सामग्री की संख्या AWC की क्षमता के लिए पर्याप्त नहीं है, तो बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करें। इससे बच्चों के एक समूह को स्वतंत्र रूप से खेलने का मौका मिलेगा, जबकि अन्य समूहों को आयु-उपयुक्त निर्देशित गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं। एक बार आवंटित समय पूरा हो जाने पर, समूह बारी-बारी से काम कर सकते हैं, जिससे प्रत्येक समूह को स्वतंत्र रूप से खेलने का अवसर मिल सके।

  ऐसी परिस्थिति में, आंगनवाड़ी सहायिका की भूमिका केंद्र के प्रबंधन व संचालन में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की मदद करने के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है।

- **सीखने के कोनों को व्यवस्थित करने के लिए स्थानीय परिवेश से सामग्री जुटाएँ –** यदि प्री-स्कूल किट में उपलब्ध सामग्री सीमित है या इस्तेमाल हो चुकी है, टूटी हुई है या अनुपयोगी है, तो सीखने के कोनों को खेल सामग्री से भरने के लिए घरों में मिलने वाली सामग्री जैसे पुराने अख़बार, स्कूल की किताबें, प्राकृतिक वस्तुएँ, फेंकी हुई लेकिन सुरक्षित वस्तुएँ आदि का उपयोग करें। सीखने के कोनों के निर्माण में योगदान देने के लिए समुदाय से सहायता लें।